Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.B.6. Hindi GurS 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Avadhayātrā.

اوده جاترا

Oudh Jatra

अवधयात्रा ॥

यात्रियों के सहायता के निमित्त अति परिश्रम से रुद्र जामल और पद्मपुराण वो स्कन्दपुराण के अनकूल ॥

श्री मुन्शी राय गुरसरणलाल अवध बासी और वक़ील अदालत गोरखपूर ने भाषा में रची

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में अति शुद्धता से छापी गई ॥

सन् १८६८ ई०

सूचीपत्र परिक्रमा के अनकूल अवध यात्रा की ॥

नाम तीर्थ	पन्ना	नाम तीर्थ	पन्ना
प्रति के भाषा का प्रयोजन,	१	बिभीषणकुण्ड, ...	२३
अवध माहात्म, ...	५	स्वर्ण कुण्ड, ...	२३
सर्यू माहात्म, ...	८	यज्ञबेदी, ...	२३
सीता राम, ...	११	अग्नि कुण्ड, ...	२३
स्वर्गद्वार, ...	१६	तिलोदकी, ...	२४
चन्द्रहरि, ...	१७	असाेग बाटिका, ...	२४
नागेश्वरनाथ, ...	१८	सीता कुण्ड, ...	२४
धर्म हरि, ...	१८	विद्या कुण्ड, ...	२४
जानकी तीर्थ, ...	१८	खर्जु कुण्ड, ...	२५
दन्तधावन कुण्ड, ...	१८	मणि पर्बत, ...	२५
रामपीठ, ...	१८	गणेश कुण्ड, ...	२५
हनुमानकुण्ड, ...	१९	दशरथ कुण्ड, ...	२६
रत्नसिंहान, ...	२०	कोशल्या कुण्ड, ...	२६
कनक भवन, ...	२१	सुमित्रा कुण्ड, ...	२६
जन्मस्थान, ...	२१	केकई कुण्ड, ...	२६
सीता की रसोई, ...	२२	दुर्भर कुण्ड, ...	२६
केकई भवन, ...	२२	महाभर कुण्ड, ...	२६
सुमित्रा भवन, ...	२२	योगिनी कुण्ड, ...	२६
ज्ञानकूप, ...	२३	उर्बसीकुण्ड, ...	२६
सुग्रीवकुण्ड, ...	२३	बृहस्पति कुण्ड, ...	२७

नाम तीर्थ	पन्ना	नाम तीर्थ	पन्ना
रुक्मिणी कुण्ड, ...	२७	इन्द्र कुण्ड, ...	३३
क्षीर सागर, ...	२७	निर्मली कुण्ड, ...	३३
क्षीरेश्वर नाथ, ...	२७	गुप्त हरि स्थान, ...	३४
धनञ्जय कुण्ड, ...	२८	गुप्तार तीर्थ, ...	३४
विष्णु हरि स्थान, ...	२८	यमस्थल, ...	३५
चक्र तीर्थ, ...	२९	दुर्गा कुण्ड, ...	३५
बशिष्ठ कुण्ड, ...	२९	दूसरी परिक्रमा, समाप्त	३५
बामदेव कुण्ड, ...	२९	नरग्राम, ...	३५
सागर कुण्ड, ...	२९	त्रिपुरारि महादेव, ...	३५
ब्रह्म कुण्ड, ...	२९	बिल्वहरि, ...	३६
ऋणमोचन, ...	३०	बाल्मीकस्थान, ...	३६
पाप मोचन, ...	३०	शृंगीऋषि का स्थान,	३६
सहस्र धारा, ...	३०	पुण्यग्राम, ...	३६
प्रथम प्रदक्षिणा, समाप्त	३१	भरथ कुण्ड, ...	३६
बैतरणी, ...	३१	नन्दी ग्राम, ...	३६
घोषार्क कुण्ड, ...	३१	कालिका देवी, ...	३७
रति कुण्ड, ...	३२	जटा कुण्ड, ...	३७
कुस्मायिध कुण्ड, ...	३२	अजितस्थान, ...	३७
मंत्रेश्वर कुण्ड, ...	३२	शत्रुहन कुण्ड, ...	३७
सीतलादेबी, ...	३३	गया कूप, ...	३७
बन्दी देबी, ...	३३	पिसाच मोचन, ...	३८
चुटुकी देवी, ...	३३	मानसर, ...	३८

नाम तीर्थ	पन्ना	नाम तीर्थ	पन्ना
तमसा नदी, ...	३८	तुन्दिल स्थान, ...	४१
मान्डव्य मुनि का स्थान,	३८	अगस्त सर, ...	४१
प्रमोदक बन, ...	३८	पारासर मुनि का स्थान,	४१
गोत्मी ऋषि, ...	३८	श्री कुण्ड, ...	४२
च्यवन ऋषि का स्थान,	३९	स्वप्नेश्वरी देवी, ...	४२
सीता कुण्ड, ...	३९	कुटिला बर, ...	४२
दुग्धेश्वर नाथ, ...	३९	कुब्जिा, ...	४२
राम कुण्ड, ...	३९	मखस्थान, ...	४२
भैरवस्थान, ...	३९	रामरेखा नदी, ...	४३
दुग्ध कुण्ड, ...	३९	राम तीरथ, ...	४३
सुग्रीव कुण्ड, ...	४०	तीसरी परिक्रमा समाप्त,	४३
हनुमान कुण्ड, ...	४०	चतुर्थ परिक्रमा, ...	४३
बिभीषण कुण्ड, ...	४०	पंचम परिक्रमा, ...	४४
आस्तीक स्थान, ...	४०	पंच तीर्थी, ...	४५
रमणक स्थान, ...	४०	उन तीर्थों के नाम जो रुद्रयामल मे पद्मपुराण में अधिक हैं,	४५
घृताची कुण्ड, ...	४०		
सर्यू औ घर्घरा, ...	४०		
जम्बु तीर्थ, ...	४१	समाप्त पत्र, ...	५०

इति

नाम तीर्थ	पन्ना	नाम तीर्थ	पन्ना
रुक्मिणी कुण्ड, ...	२७	इन्द्र कुण्ड, ...	३३
क्षीर सागर, ...	२७	निर्मली कुण्ड, ...	३३
क्षीरेश्वर नाथ, ...	२७	गुप्त हरि स्थान, ...	३४
धनञ्जय कुण्ड, ...	२८	गुप्तार तीर्थ, ...	३४
त्रिष्णु हरि स्थान, ...	२८	यमस्थल, ...	३५
चक्र तीर्थ, ...	२९	दुर्गा कुण्ड, ...	३५
बशिष्ठ कुण्ड, ...	२९	दूसरी परिक्रमा, समाप्त	३५
बामदेव कुण्ड, ...	२९	नरग्राम, ...	३५
सागर कुण्ड, ...	२९	त्रिपुरारि महादेव, ...	३५
ब्रह्म कुण्ड, ...	२९	बिल्वहरि, ...	३६
ऋणमोचन, ...	३०	बाल्मीकस्थान, ...	३६
पाप मोचन, ...	३०	शृंगीऋषि का स्थान,	३६
सहस्र धारा, ...	३०	पुण्यग्राम, ...	३६
प्रथम प्रदक्षिणा, समाप्त	३१	भरथ कुण्ड, ...	३६
बैतरणी, ...	३१	नन्दी ग्राम, ...	३६
घोखार्क कुण्ड, ...	३१	कालिका देवी, ...	३७
रति कुण्ड, ...	३२	जटा कुण्ड, ...	३७
कुस्मायिध कुण्ड, ...	३२	अजितस्थान, ...	३७
मंत्रेश्वर कुण्ड, ...	३२	शत्रुहन कुण्ड, ...	३७
सीतलादेबी, ...	३३	गया कूप, ...	३७
बन्दी देबी, ...	३३	पिसाच मोचन, ...	३८
चुटुकी देबी, ...	३३	मानसर, ...	३८

नाम तीर्थ	पन्ना	नाम तीर्थ	पन्ना
तमसा नदी, ...	३८	तुन्दिल स्थान, ...	४१
मान्डव्य मुनि का स्थान,	३८	अगस्त सर, ...	४१
प्रमोदक बन, ...	३८	पारासर मुनि का स्थान,	४१
गौत्मी ऋषि, ...	३८	श्री कुण्ड, ...	४२
च्यवन ऋषि का स्थान,	३९	स्वप्नेश्वरी देबी, ...	४२
सीता कुण्ड, ...	३९	कुटिला बर, ...	४२
दुग्धेश्वर नाथ, ...	३९	कुब्जिा, ...	४२
राम कुण्ड, ...	३९	मखस्थान, ...	४२
भैरवस्थान, ...	३९	रामरेखा नदी, ...	४३
दुग्ध कुण्ड, ...	३९	राम तीरथ, ...	४३
सुग्रीव कुण्ड, ...	४०	तीसरी परिक्रमा समाप्त,	४३
हनुमान कुण्ड, ...	४०	चतुर्थ परिक्रमा, ...	४३
बिभीषण कुण्ड, ...	४०	पंचम परिक्रमा, ...	४४
आस्तीक स्थान, ...	४०	पंच तीर्थी, ...	४५
रमणक स्थान, ...	४०	उन तीर्थों के नाम जो रुद्रयामल मे पद्मपुराण में अधिक हैं,	४५
घृताची कुण्ड, ...	४०		
सर्यू औ घर्घरा, ...	४०		
जम्बु तीर्थ, ...	४१	समाप्त पत्र, ...	५०

इति

श्रीगणेशायनमः ॥

श्लोक

नित्यंशुद्धंनिराकारं निराभासंनिरंजनम् ।
नित्यं बोधंचिदानंदं गुरूं ब्राह्मन माम्यहम ॥ १ ॥
बंदेहंरामचद्रस्य पादौप्रणतरक्षकौ ।
सीतायास्चपुनःपादौ सर्वसिद्धिविधायकौ ॥ २ ॥
रामंरामानुजंसीतांभरतं भरतानुजं ।
सुग्रीवंवायुसूनुंच प्रणमामिपुनः पुनः ॥ ३ ॥

अवध सरयू सीताराम यह महा मंच है निर्णय इस का यह है की श्रीमहादेवजी का स्कंदपुराण में औ रुद्रयामल में बचन है ॥

इति वचनं ॥

श्लोक ॥

अकारो बासुदेवस्या इकारस्तुप्रजापतिः॥
धकारो रुद्ररूपस्तु तान्ध्यायंतिमुनीश्वराः ॥ १ ॥

दूसरा बचन ॥

श्लोक ॥

मुनीश्वराश्रिततटाजागर्तिजगद्रक्षिता
गंगाच सरयूचैव ब्रह्म द्रवइतीर्यते ॥

तीसरा बचन ॥

स्लोक ॥

राम रामेति रामेती जे जपंतिच सर्बदा ।
तेषांभुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते चाचपारबतो ॥

सर्व काल और सब स्थान और सब अवस्था में इस मंत्र के स्मर्णमात्र से चारौ पदार्थ प्राप्त होती हैं ऐसी जो अवध सरयू राम रूप है तिन के चरन कमलको कोटान कोट दंडवत हैं जिन के चरन अम्बुज को ब्रह्मा औ इन्द्र आदि देवता त्रिकाल सेवते हैं औ अनेक तीर्थ संध्या विषे आवते हैं इति प्रमाण ॥

स्लोक ॥

दशकोटि सहस्राणि दशकोटि शतानिच ।
एतानि सर्व तीर्थाणि त्रिसंध्यंनिव संतिहि ।
तस्मिन्तीर्थेच देवेशिनित्य मेवपितामहः ।
उवासपरमप्रीतो देवदानव संयुतः ॥
अयोध्यायाँ महादेवि देवःसक्रपुरोगमः ।
सिद्धिःसमपिसंप्राप्तः पुण्येनमहतान्विता ॥

अनेक तीर्थ के यात्रा का फल जिस पुरी के दर्शन से प्राप्त होता है ॥

स्लोक ॥

गयाश्राद्धेनयत्पुण्यं प्रयागेय पनेनच ।
तत्पुण्यं समवाप्नोतिकोशला दर्शनेध्रुवं ॥

तद्यपि ऐसेश्रेष्टसिरोमणि विष्णु प्रियपुरीके याचाका कोई प्रकरण अयोध्या माहात्म से पृथक नहीं है जिस के अनकुल सुलभ में याची को स्थानौ औ तीर्थों का ज्ञान हो जाय औ जिन लोगोंको संस्कृत बाचने की सामर्थ नहीं है वे भी स्थानों औ तीर्थों के दर्शन स्नान से रहित न रहैं इस प्रयोजन के लिये अवध भगत के दसान दास गुरसरन लाल षत्रिसुतराय कन्हैयालाल अवधबासीने इस अवधयाचा को अयोध्या माहात्म्य औ रुद्रयामल औ स्कांन्दपुराण औ पद्म पुराण के सम्मति से परिकरमा के रीति सम्वत् १९२६ में रची इस में चारों परिकरमा रुद्रयामल के अनुकूल औ एक परिकरमा औ पंच तीरथी पद्म पुराण के मत से पृथक् पृथक् लिखी जाती हैं औ संपूर्ण पुराणों का संमति है की अयोध्या के तीर्थोंका प्रमाण कोई कहनहीं सक्ता अमित औ अनन्त है औ इस परिकरमा को संपूर्ण ब्रह्म रिषौ राज रिषों ने किया है औ इस काल में भी संत महात्मा पंडित औ सामान्य सब कोई करते हैं करता इस परिकर्मा का संपूर्ण ऋण औ जन्मान्त के पापों से निवृत्य होके संसार बिषय अनेक प्रकार का बांछित अर्थ को भोग के अंत समय में परम पद को पावैगा यह निश्चै मत्स्य पुराण में बिष्णु भगवान का बचन है औ इस में पृथक् २ अस्थानौं का सुक्षम महात्म्य इस प्रयोजन से लिखा की जिस में याचा करने वालों को भक्ति श्रद्धा उतपन्न होय क्योंकि यह दूनों परिणाम मुष्य है॥

अब प्रकृत्य यात्रा की प्रारम्भ लिखी जाती है ॥

यात्रा में सनैःसनैः चलै औ राम अस्तव राज औ गजेन्द्र मोक्ष औ राम सहस्र नाम का पाठ करता चले अथवा श्री राम सीताराम बरंबार उच्चारण करता रहे सरयूजी के किनारे पर पहुंच के इसी तरह प्रणाम करै॥

स्लोक

नमामि सर्यू तव पादपंकजं सुरासुरैरवंदितदिव्यरूपं ।
भुक्तिश्च मुक्तिश्चददासमीरतिंभावानुसारेतु सदानराणां ॥

पश्चात् श्री अवधको प्रणाम करकै औ श्रीरघुनंदनस्वामी को दंडवत करै प्रथम स्वर्ग द्वार पर्वालवनवावै औ तीर्थ ली ब्राह्मण से आज्ञा पाय के स्नान करै ब्रतरहे यथा योग्य दान देवे श्राद्ध करना औ ब्राह्मण भोजनकरवाना चाहिये इस भोज्य औ दान की द्रव्य अनन्त गुण नित्य प्रति बार होता है औ तीर्थ ली ब्राह्मणों की पूजा देवता के समान भक्ति पूर्बक अवश्य करना चाहिये इन के आत्मा की प्रसन्नता यात्रा की साक्षी मुक्त होती है ये तीर्थ के दान पात्र हैं ॥

जब की श्री शीवजी का यह बचन है की ॥

स्लोक

अयोध्याच परमब्रह्म सरयूसगुणःपुमान ।
तन्निवासी जगन्नाथः सत्यं सत्यं बदाम्य ॥

जिस में चारौ प्रकार के जीव आ गये केवलअवध बासी

होना चाहिये जहां के सामान्य औ इतर लोगों की यह महिमा है तहां के ब्राह्मण की महिमा का वर्णन कौन कर सक्ता है॥

सरयू॥

अवध पुरी के उत्तर दिशा॥

श्लोक

यस्याःपश्चिमतोनदः प्रवहतीब्रह्मात्मजोघर्घरः।
सामीप्यंनजहातियत्रसरयूपुण्यानदीसर्वदा॥
बिद्यापत्रमहाधिकागिरसुतेस्थानंचविश्नोहरेः॥
सायोध्याबिमलापुरीपुरिवरास्माकःसदानंददा॥

महाराज प्रंभुमण को इष्ट करने औ प्रतपालन करबे के हेतु बिष्णु के आज्ञा से पृथी से अन्त रिक्ष बिष्णु के सुदर्सन चक्र पर बिश्वकर्मा ने इस पुरी को बैकुंठके नीचे निर्मित किया यह पुरी बैकुंठ की प्रतिबिंब है सब से आदि है इसकारण से अयोध्या नाम हुआ सप्त पुरी में स्थूलकरिके अयोध्या मस्तकहै औ आत्मा में ब्रह्म है प्रमाण इस का यह है॥

श्लोक

बिश्नोपादमवंतिकांगुणवतीमध्येचकांचीपुरी॥
नाभौद्वारावतींवदंतिहृदयेमायापुरीपुण्यदां॥
ग्रीवामूलमुदाहरंतिमथुरानासांचबाराणसी।
मेतद्ब्रह्मपदंवदंतिमुनयोयोध्यापुरींमस्तकं॥

सहस्त्र धारा से एक एक जो जन पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण तमसा नदी प्रजन्त मत्स्याकार क्षेत्र प्रमाण है गो प्रतारमस्तक तमसा पुछ है उत्तर दक्षिण मध्य है बिस्तार तीर्थ का चौबीस चौबीस कोस चारौ दिशा है अनेक जन्म के पुण्य से प्राणी को अवध की यत्रा प्राप्तहोती है यात्रा की इच्छा करते उस प्राणी के पित्र हर्ष से नरक के बाहर निकल आवते हैं ॥ स्लोक

यदामतिंप्रकुरुते अयोध्यागमनंप्रति ।
तदानरकनिर्मुक्तागा यंतिपितरोदिवि ॥

जब मनुष्य गृह से चलता है तब एक एक पग अश्व मेध यज्ञ का फल होता है ॥

स्लोक

अयोध्यांप्रतियोदे बिप्रगच्छतिमहामति ।
पदेपदे अश्वमेधस्ययज्ञस्यलभतेफलं ॥

औ जो मनुष्य जात्री को प्रणाम करते हैं वै संपूर्ण कुल समेतस्वर्ग बिषे नन्दन बन में जाते हैं औ जो यात्री से मधुरबाणी बोलते हैं वै चैत्र रथ बन जो कैलाश में है बास पावते हैं वो जो यात्री को जूता वा सवारी वा भोजन वा जल पात्र देते हैं उन का फल अमित है वो जो जात्रा में बिक्षेप करते है वै एक कल्प रौरव नरक में रहते हैं ॥

स्लोक

बिघ्नमाचरतेयस्तु अयोध्यांप्रतिगच्छतः ।
नरकेमज्जतेमूढः कल्पमात्रंतुरौरवे ॥

औ केवल पुरी के दर्शन से पूरब सात जन्म के पाप नष्ट होते हैं ॥

स्लोक

अयोध्यादर्शनंयस्तुकरोतिमनुजोयदि ।
सप्तजन्मक्ततंपापंनस्यतेनात्रसंसय: ॥

सौ बर्ष अग्नि होत्र करने का जो फल है वही एक रात्रि अवध बास का फल है औ जो साठ हजार बर्ष काशीबास का फल है वह आधा निमीख अवध बास के बरा बर है अवधकी यथार्थ प्रशन्सा औ माहात्म्य कहने की किसी को शक्ति नहीं है ॥

स्लोक

यस्या:प्रभावमातुल्यंवेदादेवाभिवोह्यहं ।
नहिवक्तुंसमर्थास्मोबिष्णुश्चसगुण:पुमान् ॥

औ जिन्ह का यहां शरीर छूटता है बै पर्म पद पावते हैं ॥

गोसाईं जी का बचन है ॥

चौपाई ॥

चारि प्रकार जग जीव अपारा ।
अवध तजेतन नहिं संसारा ॥

औ इस में सप्त हरि का अस्थान है गुप्त हरि चक्र हरि बिष्णु हरि धर्म हरि बिल्व हरि गुप्त हरि चन्द्र हरि औ इस पुरी के समान बैकुंठ भी श्री अवध बिहारी जी को प्रिय नहीं है श्रीरघुनन्दन स्वामी का बचन है ॥

चौपाई ॥

जद्यपि सब बैकुंठ बखानी ।
बेद पुराण बिदित जग जानी ॥
अवध सरिसप्रिय मोंहि नसोऊ ।
यहप्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
सरयू जी अवध के उत्तर दिशा ॥

ब्रह्माजी नारायण के नाभ कमल से प्रगट होके नारायण के आज्ञा से कुंभज तप अनुष्टान किया जब देवता के बर्ष से हजार बर्ष तप करते हुआ तब ब्रह्माजी का उग्र तप देख के नारायण आए औ नारायण के नेत्र से प्रेम प्रवाह जल चला ब्रह्मा ने उस जल को अपने कमंडल में रखि लिया पश्चात मनसा से सरोवर उत्तपन्न करके उस में अस्थापा इस कारण से मानसरोवर औ सरयू जी का नेत्रजा नामपड़ा छमन्वन्तर अथवा ४२६ जुग के पश्चात सतवें मन्वन्तर में श्राद्ध देव के पुत्र राजा इक्ष्वाकु उत्तपन्न भये उन के आज्ञा से बसिष्टजी ब्रह्माजी को अपने तपसे प्रसन्न करके मानसरोवर से सरयूजी को ल्याये इस करके वासिष्ट गंगा नाम पड़ा औ रामचन्द्रजी के हेतु अवध में आई है राम गंगा भी नाम है ॥

श्लोक

मन्वन्तरसहस्त्रैस्तुकाशीवासेनयत्फलं ।
तत्फलंसमवाप्नोतिसरयूदर्शनेकृते॥

टीका ॥

हजार मन्वन्तर काशी बास का जो फल है सोइ फल सरयू के दर्शन से प्राप्त होता है ॥

श्लोक

प्रयागेयोनरोगत्वामाघान्द्वादसकंवसेत्
तत्फलंसमवाप्नोतिसरयूदर्शनेक्षते ॥

प्रयाग बारह माघ बास का यो फल है सोइ फल सरयू दर्शन से प्राप्त होता है ॥२॥

श्लोक

मथुरायाकल्पमेकंवसतेमानवोयदि ।
तत्फलंसमवाप्नोतिसरयूदर्शनेक्षते ॥

एक कल्पमथुरा बास का फल जो है सोइ फल सरयू के दर्शन से प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

श्लोक

यागतिर्योगयुक्तानांबाराणस्यांतनुत्यजाँ ।
सागतिःस्नानमात्रेणमरज्वांहरिवासरे ॥

जो गति योग करने से जोगी की अथवा काशी में मरने से है सोइ गति एकादशी को सरजू स्नानसे होता है ४ ॥

श्लोक ॥

पुष्करेतुनरोगत्वाकार्तिक्यांक्षतिकायुतिः।
तत्फलंसमवाप्नोतिसरयूदर्शनेक्षते ॥

पुष्कर की कार्तिक छता जुत यात्रा करने का जो फल है सोइ फल सरयू के दर्शन से प्राप्त होता है ॥५॥

स्लोक

नतस्यपुनरावृतिःकल्पान्तरसतैरपि।
जलरूपेणब्रह्मैवसरयूमोक्षदासदा ॥

जो सरजू के दर्शन करने वाले हैं तिन्ह के सैकरन कल्प करके फेर आगमन नहीं होता काहेते की जल रूप करि के सरयू ब्रह्म रूपा है सदा मोक्ष के देने वाला है ॥६॥

स्लो क

नैवात्रकर्मणाभोगोरामरूपोभवेन्नरः
पशुपक्षिमृगाश्चैवयेचान्येपापयोनयः ॥
तेपिमुक्तादिवंयांतिममवाक्यंनसंयः।

इस में कर्म का भोग नहीं होता राम रूप मनुष्य होते हैं पशु पक्षी मृगा और ये पाप योनि हैं सो सब मुक्त हो कर स्वर्ग को जाते हैं हमारा वाक्य है सन्देह नहीं है ७ औ सरयूजी की इस अस्तुति से अस्तुति करना चाहिये महाराजा दसरथ ने अस्तति करी है औ सरयूजी ने सीधि बर दिआ है ॥

इति स्तोत्र ॥

नमस्तेसरयूदेविबशिष्टतनयेशुभे।
ब्रह्मादिसकलैर्देवैर्ऋषिभिर्नारदादिभिः १॥

सदात्वंसेवितादेवितथासुकृतिभिर्नरैः
मनसाचमयायातेजगतोपापहारिणि २ ॥
स्मरतांपश्यतांदेविपापनाशेपटीयसि ।
येपिबंतिजलंदेवित्वदीयंगतमत्सरा ३॥
तेनमातःस्तनौपानंकरिष्यतिकदाचन ।
तेनप्रभृतिर्भिमात्यैर्मानित्यसिसदाशुभे ४
त्वत्तीरेरमणेनैवत्वन्नामरटनेनच ।
येत्यजंतितनंदेवितेकृतार्थानसंशयः५ ॥
त्वंतुनेत्रोद्भवादेविहरेर्नारायणस्यहि ।
महिमातवदेवैश्चगीयतेचमुहुर्मुहुः ६ ॥
तवकाममयशक्तिर्हिस्तवनेमाम्यममयाच ।
त्वत्तीरेसर्वतीर्थानिनिबसंतिचतुर्युगे ॥
सीताराम रत्न सिंघासनविषे ॥

स्लोक

राजेन्द्रंसत्यसंध्यंदसरथतनयंस्यामलंशांतिमूर्तिं ।
बन्दे लोकाभिरामंरघुकुलतिलकंराघवंरावणारिं ॥

प्रभु के नाम का महत्व अमित है जब आप परमेश्वर नाम का महत्व नही कह सके तब दूसरेकी क्या सक्ती है जो अर्ध मात्रा के भी माहात्म्य को कह सकै ॥

चौपाई ॥

कहो कहा लगि नाम बड़ाई ।
राम न सकै नाम गुन गाई ॥

नाम के माहात्म्य को चारो बेद छ वो शास्त्र आठारहो पुराण उपपुराणादि संपूर्ण सनातन गावते हैं परंतु कहते हैं कि कुछ भी कहा नहीं जाता अपारमन गोचर के परे है धन्य हैं वे प्राणी जिन के मुख से रामनाम उच्चारण होता है ॥

श्लोक

नचरामसमंनामनचनामसमंजपः

नवैदेहीसमामाताह्यस्मिनब्रह्माण्डगोलके ॥

राम तुल्य दूसरा नाम नहीं है नाम के जपते दूसरा जप नहीं वैदेही समान दूसरी माता नहीं यह ब्रह्माण्ड के बिषे ॥

श्लोक

रामरामेतिसीतेतिजेजपन्तिजनाभुवि ।

तेषांभुक्तिश्चमुक्तिश्चनाचकार्य्यविचारणात् ॥

इस का अर्थ सीताराम वा रामराम वा सीता ऐसा जन पृथ्वी बिषे मुखते कहते हैं सो भुक्ति मुक्ति फल पावते हैं ॥

सनत्कुमारसंहितायाम्

श्रीरामरामेतिजनायेजपंतिचसर्वदा ।

तेषांभुक्तिमुक्तिश्चभविष्यतिनसंशयः ॥

इस का अर्थ सर्व काल में जे जन राम राम जपते हैं ते

जन को भुक्ति मुक्ति दोनों होय संशय नहीं है॥

इति बिश्वामित्र बचनम्॥

रामेतिरामभद्रेतिरामचन्द्रेतियस्मरन्

नरोनलिप्यतेपापेमुक्तिंभुक्तिंचविंदति॥

इति सनत्कुमार बचनम्॥

तेधन्यामानवालोकेयेस्मरंतिरघूतमम्।

तत्चणात्भ्रंस्हतिंकीत्वांगछंतिस खमव्ययम्॥

इति भविष्य पुराणे॥

कायेनमनसावाचासमहदुःक्ततंक्ततं।

रामरामेतिसंकीर्त्यसद्यस्तस्माद्विमुच्यते॥

इस का अर्थ मनवानी सरीर करिके अत्यन्त बडे पाप जो किये है राम राम ऐसा कहते तिस काल ही तिन पापों ते मुक्ति होती है औ दूसरे दूसरे जो यत्नहै एक तौ परमेश्वर के नाम कितन के साद्दश्य रेन के तुल्य नहि औ तिस पर दूसरे साधन के बास्ते बन बिद्या अवस्था देस काल सामगृही प्राकर्म सहायक और अनेक बस्तु चाहिये और परमेश्वर के नाम आराधन को कोई वस्तु न चाहिये जिस स्थान प्रनाम आराधन होय वही उग्र तीर्थ है औ जिस काल में नाम उच्चारण होय वही पर्व है औ जिस शरीरसे नामउच्चारणहोय वही योग्य है औ जिस आचरन में नाम उच्चारण होय सुभ है भाव पूर्बक नाम उच्चारण होयअथवा वे भाव से शुद्धता नाममें उच्चा

रण होय वाअसुद्दतामें कौनौ प्रकारसे नाम उाचर्ण होय अवश्य मेव नाम का फल प्राप्त होता है ॥

चौपाई ॥

भाव कुभाव अलष आलसहू ।
राम नाम मंगल दिसदसहू ॥
उलटा नाम जपत जग जाना ।
बाल्मीक भए ब्रह्म समाना ॥

इति ब्रह्म पुराणे ॥

अशुचिर्वापिशुद्धोवायस्सदाकीर्तयेद्धरिम् ।
सोपिदोषक्षयान्मुक्तिं लभेच्चेदिपतिर्यथा ॥

इस का अर्थ अशुद्ध है अथवा शुद्ध है जो सदा परमेश्वर के नाम का कहता है सो पुरुष दोषोंका नाश करने वला हुआ मुक्ति को प्राप्त होता है ॥

श्लोक

सकृदुच्चारयेद्यस्तु राम रामेति हेलया ।
ब्रह्महत्यादिपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः ॥

इस का अर्थ सुभाव करि के निरादर जो राम इस नाम को एक बार भी उच्चार्ण करता है सो ब्रह्म हत्या से ले कर जितने पाप हैं तिनते मुक्ति होता है ॥

चौपाई ॥

नाम प्रताप जान शिव नीके ।
काल कुटिल फल कीये अमी के ॥

जिस सच्चिदानन्द घन श्याम का यह पतित पावन भक्ति वत्सल करुना निधि दीन दयाल ऐसे सहस्त्र नाम से सभी नित्य उच्चारण करते हैं परंतु तृप्ति नहीं होते वे कैसे हैं ॥

इ ति अध्यात्म रामयणे ॥

राम॑विद्धिपरंब्रह्मसच्चिदानन्दमब्ययम् ।
सर्बोपाधिविनिर्मुक्तंसतामात्रमगोचरम् ॥

इस का अर्थ राम ऐसा पद जो है तिन को पर ब्रह्म सत् सत्य चित् चैतन्य आनन्द अब्यय बिकार रहित सर्बोपाधि करिके रहित सता मात्र बर्त्तमान अगोचर अगम्य है ॥

इति सनत्कुमार वचनम् ॥

शान्तंसर्बगतंसूक्ष्मंपरंब्रह्मसनातनम् ।
राजीवलोनंरामंप्रणमामिजगत्पतिं ।

इसका अर्थ शांत सर्बगत सूक्ष्म निर्गुण परब्रह्म सनातन आदि कारण दया दृष्टि के देखने वाले असे राम जगत के पति सर्ब ब्यापक इनको प्रणाम करो हैं ॥

स्लोक ॥

आ रामः कल्प वृक्षाणां बिरामः परमा पदां ॥
अभि राम स्त्रिलोकानां रामः श्री मान्सतःप्रभुः

श्री श्री जानकी रवन जी महारजा का चरित्र आवागवन के दुख से निवृत्ति कर्ता है ॥

इति स्कन्द पुराणे

चरितंरघुनाथस्यशतकोटिप्रविस्तरं ।

एकैकमक्षरंपुंसांमहापातकनाशनं ॥

इति श्रीमद्भागवते

पुरुषोरामचरितंश्रवणैरुपधारयेत् ।

आव्रसंस्यपरोराजन्कर्मबंधैर्विमुच्यते ॥

इसका अर्थ शुकदेवजी परीक्षितसे कहते हैं की जोप्राणी राम कथा श्रवण में धारण करता है तो प्राणी संसार से होय कर कर्म बन्धन से छूटि जाता है शुद्धता होता है ॥

अब अन्तर्गृही परि कर्मा प्रारम्भ होती है कर्त्ता को स्वर्ग द्वार वा सहस्र धारा से प्रारम्भ कर्नी चाहिये नित्य वो हरि बासर्को यह परि कर्मा सब कर्ते हैं ॥

स्वर्गद्वार सहस्र धारा के पूर्व ६३६ धनुष प्रमाण है ॥

स्वर्ग द्वार अनादि तीर्थ है प्रातःकाल मे संपूर्ण तीरथ औ श्री राम चन्द्र महाराजभाइनसहित औ ब्रह्मा आदि सब देवता इहां रमन करते हैं ॥

श्लोक ॥

चतुर्धाचतनुंकृत्वादेवदेवोहरिस्वयं ।

अत्रैवरमते नित्यंभ्रातृभिःसहराघवः ॥

ब्रह्मलोकपरित्यज्यंचतुर्वक्त्रःसनातनः ।

यत्रैबरमतेनित्यं देवैःसहपितामहः ॥

जो प्राणी प्रातः स्नान करते हैं उनको सबतीरथ के स्नान का फल प्राप्त होता है ॥

औ संसार बिषे अनेक भाँति के सुख करिके अंतकाल में चतुर्भुज होकर बैकुंठ जाते हैं औ जो किसी काल में स्नान करते हैं उनका भो सब पाप नष्ट होता है ॥ प्रमाण

श्लोक ॥

मेरुमंदरतुल्योपिराशिःपापस्यकर्मणा ।
स्वर्गद्वारंसमासाद्यपापेव्रजतिसंक्षयं ॥

इस तीर्थ के फल कहने को किसी को सामर्थ्य नहीं पृथ्वी औ बस्त्र औ गौ औ अन्न औ सुबर्ण दान करना चाहिये इस पुण्य की छै नहीं है दिन प्रति दिन औ हरि बासर को बिशेष जात्रा है वो जो यहां प्राण त्याग ते हैं वे बैकुंठ जाते हैं उतरायण दच्छिणायण सूर्य का भेद यहां नहीं है ब्रह्मलोक से सेषलोक प्रजन्त भूत भबिष्य बर्तमान कोई तीर्थ ऐसा नहीं है ॥

महादेव जी का यह बचन है ॥

श्लोक

स्वर्गद्वारसमंतीर्थंनभूतंनभविष्यति ।
सत्यंसत्यंपुनःसत्यंनासत्यंममभाषितं ॥

चन्द्रहरिस्वर्गद्वारप्रा० ॥

पूजा दान होम ब्रत जप करना चाहिये जो फल सब देवता के पूजा से होता है वह चन्द्र हरि के पूजा से है इस फलको नास नहीं चन्द्रमा का स्थापित वो बिष्णु का बर है जेठ के पूर्णिमा को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

नागेश्वर नाथ चन्द्र हरि के पूर्व दिसा ॥

पूजा दर्शन करने वाले की सब मनोरथ सिद्धि होती है वो जो कोई दर्शन पूजा न करै उसको स्वर्गद्वार के स्नान का आधा फल होता है राजा कुश का स्थापित औ शिवका बर है इस मंत्र से पूजा करना चाहिये ओं नमः शिवाय ॥

धर्म हरिचन्द्र हरि के अग्नि कोण पर ॥

नारायण ने धर्म परब्रह्म होके बर दिया है कि जो प्राणी स्वर्गद्वार स्नान करके धर्म हरिकी पूजा करैगा वो दान देगा सब पाप से निवृत्ति होके बांछित फल पावेगा अन्त काल में बैकुंठ प्राप्त होगा असाढ़ सुदी ११ को सम्वत्सरी यात्रा है ॥

जानकी तीर्थ सरयू में धर्म हरि के ईशान ॥

स्नान दान करने से सुख अन्त में बिष्णु लोक प्राप्त होता है इस पुण्य की नाश नहीं होती सावन सुदी ३ को सम्वत्सरी यात्रा है ॥

दन्त धावन कुण्ड रत्न सिंहासन के दक्षिण ॥

स्नान दान करने से आवागमन छूटि जाता है कौडिन ब्राह्मन का मृग चरम इस कुण्ड में गिर पड़ा जलके अरस परस से मृगा का जीव आत्मा बैकुंठको गया राम नौमी को सम्वत्सरी यात्रा है ॥

राम पीठ स्वर्गद्वार के दक्षिण एक कोस पूर्व पश्चिम

एक कोस उत्तर दक्षिण प्रमाण है कोट के पूर्व दरवाजे पर हनुमान जी हैं हनुमान जी के दक्षिण सुग्रीव वो सुग्रीव के दक्षिण अंगद वो राम पीठ के दक्षिण दरवाजे पर नल वो नील वो सुखेन नवरत्न के पूर्व वो गवाक्ष नवरत्न के उत्तर दधिवक्र वो कोटेश्वर वो सत्यबलि पश्चिम दरवाजे पर औ गन्धमादन कोटेश्वर के उत्तर वो रिखभ गन्ध मादन के उत्तर वो सरभ रिखभ के उत्तर वो बनस सरभ के उत्तर वो बिभीषण उत्तर दरबाजे पर वो समीराक्षसी बिभीषण से पूर्व वो बिघ्नेश्वर समी से पूर्व औ पीडा कर वीरबिघ्नेश्वर से पूर्व वो मतगजेन्द्र पीडा करके पूर्व औ सागर मतगजेन्द्र के पास मतगजेन्द्र की पूजा बिधि पूर्वक करै तौ सब सिद्धि मिलै नवरात्र के पंचमी को सम्वत् सरी यात्रा है वो मंगलबार को यात्रा है द्विबिध सागर के पूर्व वो महेन्द्र राम पीठ के ईशान कोण पर वो जामवान महेन्द्र के दक्षिण वो केसरी जामवान के दक्षिण ये चारौ दिसा कोट के रक्षपाल हैं ॥

हनुमान कुण्ड हनुमान गढ़ी से अग्नि कोण पर ॥

हनुमान कुण्ड में स्नान करि के हनुमानजी का दर्शन पूजा करै औ इस मंत्र से अस्तुति करि के प्रणाम करै ॥

अथ मंत्र: ॥

अंजनीनन्दनोदेवोजानकीशोकनाशनं।
कपीशमक्षहंतारंवन्देलंकाभयंकरं ॥

तौ सब सिद्धि प्राप्त होय मंगल बार को याचा है
हनुमान जी को पूजा करिके तब कोट में जाय औ रत्न
सिंहासन की पूजा करै ॥

रत्न सिंहासन कोट के मध्य भाग में ॥

रत्न सिंहासन कल्पवृक्ष के जड़ में है जहां श्री राम
चन्द्र जी महाराज बिराज मान रहि के राज काज करते
रहे जो रामचन्द्र को वहां सिंहासन पर बिराजते
वो सीता जी को बाम भाग वो लक्ष्मण जी भरथ शत्रुघ्न
जी को पीछे औ हनुमान जी को हाथ जोड़े आगे वो जो
बंदर राक्षस को राम कोट के चारों दिशा कहि आये हैं
बशिष्ट बामदेव मार्कण्डेय नारद सहित ध्यान करैगा वो
सीता राम जी का सब सामग्रीही से बिधिवत इस मंत्र
से पूजा करै ॥ अथ मंत्र

यंरामायनमोह्येषातारकोब्रह्मरूपकं ।
नाम्नांबिश्नोसहस्राणामधिकोयंमहामनुः ॥

औ अस्तुति औ प्रणाम करै ॥

अथ स्तोत्र

राघवेन्द्रमहाराजरावणांतकभोच्युत:
कामादिभिःपराभूतंरक्षमांशर्णागतं ॥ १ ॥
रामायरामभद्रायरामचन्द्रायबेधसे ॥
रघुनाथायनाथायसीतायाःपतयेनमः ॥ २ ॥
संप्राप्यनगरंदिब्यमभिषिक्तास्तुसीतय: ॥
राजेश्वराधिराजायसीतायाःपतयेनमः ॥ ३ ॥

ब्रह्मादिदेवदेवायब्रह्मणायमहात्मने ॥
जानकीप्राणनाथायरामभद्रायतेनमः ॥ ४ ॥
बिभीषणश्चसुग्रीवोरत्तौशरणागतौ ॥
तथामांदेवदेवशपादौतेप्रणतोस्म्यहं ॥ ५ ॥
कनक भवन जानकी महल राम कोट में
रत्न सिंहासन के उत्तर ॥

स्थान के दर्शन औ जानकी जी के पूजा से इच्छित अर्थ प्राप्त होता है जानकी जी सखिन समेत वहां बास करती हैं इस मंत्रसे बिधिवत पूजन करै अथ मंत्र ॥

गन्धद्वारादुराधर्षांनित्यपुष्टकरीषिणीं ॥

वो इस मंत्र से प्रसन्न चित्तसे अस्तुति करना चाहिये ॥

अथ स्तोत्र

बंदेबिदेहतनयापदपुण्डरीकं कैशोरसौरभसमाहृतयोगचितं। हंतुंत्रितापमनिसंमुनिहंससेव्य सन्मानसालिपरिपीतपरागपुंजं ॥

जन्म स्थान राम कोट में बिघनेश्वर के पूर्ब १९०० धनुष औ बशिष्टके उत्तर औ लोमस के ५५० धनुष पश्चिम जन्म भूमि प्रमाण है यह स्थान राज महलब्रह्मा जी का निर्मित है जो प्राणीराम घाट स्नान करिकेरामनौमी का ब्रतरखि के जन्मभूमि का दर्शन वो राम षटाक्षर मंत्र सेराम जी कोपूजा अस्तुति नादन्तय करैगा उसका आवागमन निबृत्ति होय जायगा औ हजार गौदान नित्य करने का फल होता है औ हजार राज सूययग्य का फल होता है ॥

श्लोक ॥

कपिलागोसहस्रं चयोददातिदिनेदिने ॥
तत्फलंसमवाप्नोति जन्मभूमेःप्रदर्शनात् ॥ १ ॥
राजसूयसहस्राणिप्रतिवर्षाग्निहोत्रतः ॥
तत्फलंसमवाप्नोतिजन्मभूमेःप्रदर्शनात् ॥ २ ॥

सब व्रतों में राम नौमी का व्रत यथा सब मणि में चिन्ता मणि वो वृक्षों में कल्प वृक्ष है नौमी के व्रत करने वाले को भागवत को गत प्राप्त होती है तुला आदि दान वो कुरु क्षेत्र सुरज ग्रहण मे अनेक दान करने का जो फल है सो राम नौमी के व्रत से होता है ॥

श्लोक ॥

चिंतामणिर्मणीनांचवृक्षाणांकल्पवृक्षवत् ॥
व्रतानामपिसर्वेषांतथैवनवमीव्रतं ॥ १ ॥
सूर्यग्रहेकुरुक्षेत्रे महादानैःकृतैर्कृतैः ॥
तत्फलंसमवाप्नोतिश्रीराम नवमीव्रतात् ॥ २ ॥

सीता की रसोई जन्म भूमि से वायिब्य कोणपर ॥

दर्शन से सर्ब सिद्धि प्राप्त होती है सब अघ से निरत्व होता है नित्य याचा है ॥

केकई भवन जन्म भूमि के २० धनुष उत्तर दिशा ॥

दर्शन से सब पाप नष्ट होतेहैं चैत्र सुदी १० को जब भरथ जी का जन्म है सम्वत्सरीयाचा है ॥

सुमित्रा भवन जन्म भूमि के ३० धनुष दक्षिण ॥

दर्शन से सब पाप वो रोग नष्ट हो जाता है चैत्रसुदी

११ जिस दिन लक्ष्मण जी औ शत्रुघ्न जी का जन्म है सम्बत् सरी यात्रा है ॥

ज्ञान कूप प्रसिद्धि सीता कूप जन्म भूमि के अग्नि कोण पर ॥

जल पान करने से बृहस्पति के तुल्य बुद्धि होती है बसिष्ट बामदेव सदैव जल पान करते हैं ॥

सुग्रीव कुण्ड धर्म राज के दक्षिण दिसा ॥

कुण्ड के स्नान करने से श्री रामचन्द्र जी के चरण में प्रीति होती है रामनौमी को सम्बत् सरी यात्रा है ॥

बिभीषण कुण्ड सुग्रीव कुण्ड के बायिब्य कोण पर ॥

यथा सुग्रीव कुण्ड को फल यात्रा है ॥

स्वर्ण कुण्ड हनुमान कुण्ड के दक्षिण दिसा ॥

दर्शन स्नान दान से पाप का नास होजाता है वो लक्ष्मी प्राप्त होती है पूर्व काल बिषे राजा रघु के भय से कुबेर ने स्वर्ण की बर्षा की यह कारण से स्वर्ण कुण्ड नाम पड़ा बैशाख सुदी १२ वो कुआर सुदी १० को सम्बत् सरी यात्रा है ॥

यज्ञ वेदी स्वर्ण कुण्ड के दक्षिण ॥

यज्ञ बेदी में पिण्ड दान करने से गया श्राद्ध का फल है पित्र तृप्ति होते हैं कर्त्ता को अश्व मेध यज्ञ का फल होता है सर्बदा यात्रा है ॥

अग्नि कुण्ड यज्ञ वेदी के पश्चिम ॥

अग्नि कुण्ड में स्नान दान से बिशेष फल होता है अलं-

कार सहित गोदान की बड़ी प्रसंशा है अगहन के कृष्ण पक्ष वो शुक्ल पक्ष ५ को सम्बत् सरी यात्रा है ॥

तिलोदकी औ सरयू का संगम यज्ञ वेदी के दक्षिण दिसा ॥

संगम के स्नान से अश्वमेध अग्निष्टोम यज्ञ का फल है औ अनेक जन्म के पाप नष्ट होते हैं जप ब्रत होम दान करना चाहिये तिल के समान जल का श्याम रूप है इस ते तिलोदकी नाम परा श्रीरामचन्द्रजी ने घोड़ों के जल पान करने को मगाया है ॥

असोग बाटिका तिलोदकी के पश्चिम भाग ॥

रामचन्द्रजी का रहस्य भूमि है दर्शन से अनेक बिनोद प्राप्त होते हैं अगहन बदी १४ को सम्बत् सरी यत्रा है ॥

सीता कुण्ड तिलोद की के पश्चिम असोग बाटिका बिषे ॥

कुण्ड के स्नान दान पूजा सीता राम से संपूर्ण पाप से निवृत्ति होता है इच्छित फल प्राप्त होता है रामचन्द्रजी का बर है अगहन में स्नान से मोक्ष होती है और मास के स्नान से स्वर्ग औ अगहन बदी १४ को सम्बत् सरी यत्रा है ॥

बिद्या कुण्ड सीता कुण्ड के पश्चिम ॥

बिद्या कुण्ड के पश्चिम दिशा विद्या का स्थान है औ कुण्ड के दक्षिण दिशा विद्या देवी का स्थान है जो प्राणी

कुण्ड बिषे स्नान करिके देवीजी का दर्शन करते हैं उस की सब अभीष्ट सिद्धि होती है विद्यामान होता है जिस मंत्रकाजपकरै वह मंत्रसिद्धिहोय यहसिद्धिपीठहै औ इस मंत्र से अस्तुति करै॥ श्लोक

ओंयेत्वांदेविमहेश्वरीयुतिदिनंध्यायंतिपूजापरा।
तेतेमत्तगजामदश्रुतिहतद्वारातधूलीचपा॥
येत्वन्मंत्रवरंजपंतिबिधिवत्तेदेबिलोकेश्वरा।
येनिष्कामतयाभजंतिभवतीतेमुक्तिभाजोचिरात्॥

खरयू कुण्ड विद्या कुण्ड के दक्षिण॥

स्नान से खाजु आदि रोग नष्ट होते हैं रबि बार को यात्रा है॥

मणि पर्वत बिद्या कुण्ड के पश्चिम।

सीता जी की प्रार्थना से राम जी ने गरुडसे यह पर्बत बिहार करवे के हेतु मगवाया इस के दर्शन से हजार १००० जन्मका पाप नष्ट होताहै जो सुमेर बराबरपाप होय तौ भी छूटि जाय॥

गणेश कुण्ड मणि परवत से दक्षिण है॥

स्नान से सब पदार्थ प्राप्त होता है गणेशकी पूजा करै माघ बदी ४ को सम्बत्सरी यात्रा है औ इस मंत्र से अस्तुति करै॥

अथ स्तोत्र॥

नीलांजनाभंगजतुंडवक्रंशशुंगृहीत्वानिजपुष्करेण।
उल्लासयंतंगगनेगणेशध्यायेच्चनित्यंबिधिवन्मनुष्यम्॥

दसरथ कुण्ड गणेश कुण्ड के पश्चिम भाग ॥

कुण्ड में स्नान से मनोरथ सिद्धि होता है भादों के पूर्णमासी को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

कौसिल्या कुण्ड दसरथ कुण्ड के पश्चिम भाग ॥

यथा दसरथ कुंड की फल यात्रा है ॥

सुमित्रा कुंड कौसिल्या कुंड के पश्चिम ॥

यथा दसरथ कुंड का फल औ भादो बदी ३० को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

केकयी कुंड सुमित्रा कुंड के दक्षिण दिशा ॥

फल औ यात्रा यथा सुमित्रा कुंड ।

दुरभर कुंड केकई कुंड के नैरित्य कोण पर ॥

स्नान करिके बिष्णु औ शिव का ध्यान करै संपूर्ण अघ से निवृत्ति होय भदों बदी १४ को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

महाभरं कुंड दुरभर कुंड के समीप ॥

फल औ यात्रा यथा दुरभरं कुंड ॥

जोगिनी कुंड महाभरं कुंड के बायव्य कोण पर ॥

स्नान से मनोरथ सिद्धि होता है बिशेष सीघ्र में स्त्री की इच्छा पूर्ण होती है औ सुन्दरता प्राप्त होती है भादों सुदी ३ को सम्बत्सरी यात्रा है॥

उर्बसी कुंड जोगिनी कुंड के पूर्ब ॥

स्नान करिके रामचन्द्रजी का पूजाध्यान करै सब पाप

से निवृत्ति होय सुन्दर्ता मिलै अन्त में बिष्णु लोक प्राप्त होय भादों सुदी ३ को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

बृहस्पति कुंड उरबसी कुंड के पूर्ब ॥

स्नान करके होम औ दान करै बृहस्पति की मूर्त्ति सुवर्ण की पूजै तौ नवग्रह शांति होजाय कोई ग्रह असुभ औ अरिष्ट फल न करै भादों सुदी ५ को यात्रा है ॥

रुक्मिनी कुंड बृहस्पति कुंडके दक्षिण ॥

श्री कृष्णचन्द्र संपूर्ण रानिन सहित द्वारिका से अवध यात्रा को आये औ अपने आइउध से कुंड करिकेरुक्मिनी कुंड नाम धरा औ वर्दिआ की जो इस कुंड में स्नान करै उस को पुत्र औ धन औ अन्त में परम पद प्राप्त होय कार्तिक सुदी ९ को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

इस मंत्रसे अस्तुति चित शुद्ध करिके करना चाहिये ॥

अथ स्तोत्र ॥

अतसीकुशुमस्याम:कमलायतलोचन: ।

एवंकृतेनसंदेह:सर्व्वान्कामानवाप्नुयात् ॥

क्षीर सागर वो क्षीरेश्वरनाथ महादेव रुक्मिणी कुण्ड के उत्तर ॥

राजा दसरथ जी ने शृंगी ऋषि की आज्ञा से महादेव जी को स्थापन करिके पुत्रहेतु यज्ञ किया महादेव जी यज्ञ पुरुष हो के प्रसाद दिया वो बर दिया जो प्राणी कुण्ड मे स्नान करिके पूजा महादेव जी की करै अनेक भांति का

सुख पावै औ पुत्र लाभ होय क्वार सुदी ११ को यात्रा है इस मंत्र से अस्तुति करना चाहिये ॥

अथ स्तोत्र ॥

कैलाशोनिलय:सखाधनपतिर्मौलौसुधा दीधितिम् ।
मूर्द्धि:स्वर्गतरंगिणीविहरणंकल्पद्रुमाणांबनं ॥
तद्विश्वेश्वरनन्दमस्वसगणंत्वाह्वयपीठेस्थितं ।
दिव्यैर्बिल्वदलैर्जलैलघुतरैर्यद्वंचयामोवयं १ ॥

धनञ्जयकुण्ड कीरेस्वर से नैरित्य कोण पर ॥

स्नान करिके राम चन्द्र जी का ध्यान करिके औ गुप्त दान देवै तौ कदापि उस प्राणी को मोहन व्यापै औ देह की बेकार बासना नष्ट होजाय औ कुण्ड मे तरपन करने से पित्र तृप्त होते हैं बिस्वामित्र जी का बर है कार्तिक बदी १४ को सम्बत् सरी यात्रा है इस मंत्र से तरपन करै

अथ मंत्र

आब्रह्मस्तवपर्यन्तजगतृप्यतुमेजलैः ॥
अपसव्येनबिधनातर्पयेदंजलित्रयं ॥ १ ॥

बिष्णु हरि अस्थान धनञ्जय कुंड के पश्चिम ॥

दर्शन पूजा अस्तुति करने से बिष्णु लोक प्राप्त होता है चक्र तीर्थ मे स्नान करके दर्शन करना बिधि है दुसरे जगह स्नान करिके भी दर्शन करना अजोग्य नहीं है कार्तिक सुदी १० को सम्बत् सरी यत्रा है इस मंत्र से अस्तुति करै ओं नमो भगवते बासु देवाय ॥

चक्र तीर्थ धनञ्जय कुंड के पश्चिम ॥

बिष्णु ने चक्र पटका उससे कुण्ड बनि गया पाताल गंगा का जल प्रगट भया उसके स्नान दान से अन्त मे बैकुंठ का भागी होता है औ पिण्ड दान करने से पित्र उस प्राणी के बैकुंठ बास पावते हैं इस कुण्ड मे स्नान करिके बिष्णु हरि का दर्शन करना बिधि है कार्तिक सुदी १० से पुरणमासी पर्जंत सम्बत्सरी यात्रा है ॥

बशिष्ट कुण्ड चक्र तीर्थ से ईशान कोण पर ॥

कुण्ड बिषे स्नान दान करि के रामचन्द्र जी का ध्यान औ बशिष्ट जी औ रुन्धती जी की बिधि पूर्बक पूजा करै सब पाप से निवृत हो के बैकुंठ का भागी होय भादों सुदी ५ को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

बाम देव कुण्ड बशिष्ट कुण्ड के समीप ॥

यथा बशिष्ट कुण्ड की यात्रा औ फल है ॥

सागर कुण्ड बशिष्ट कुण्ड के ईशान कोण पर ॥

कुण्ड के स्नान दान से समुद्र के स्नान का पुण्य है अन्त मे स्वर्ग प्राप्त होता है क्वार की पुर्णमासी को सम्बत्सरी यात्रा है औ सब मास के पुर्णमासी को यात्रा होती है ॥

ब्रह्म कुण्ड सागर कुण्ड के बायब्य कोण ॥

ब्रह्मा जी का जन्मस्थान है ब्रह्माजी का बर है की जो प्राणी कुण्ड मे स्नान करके स्वर्ण का बर्न दान करैगा उसका संपूर्ण पाप नष्ट होजायगा वो अन्त में हन्स पर चढ़ि के ब्रह्म लोक जायगा इस स्थान पर यथा सामर्थ्य दान

वो बिनै करै जिसमे ब्राह्मण त्रिप्ति होय वो श्राद्ध करना योग्य है पित्र त्रिप्ति होके ब्रह्म लोक को गमन करते हैं कार्तिक शुक्ल पक्ष १४ को यात्रा है ॥

ऋणमोचन ब्रह्मकुण्डके पूरब उत्तर १००धनुख प्रमाण है ॥

लोमस जी का तीनौ ऋण स्नान मात्र से निवृति होगया औ लोमस जी का बचन है की जो प्राणी स्नान करके स्वर्ण औ अन्नदान करैं संपूर्ण ऋणसे छूटि जाए यह बड़ा तीर्थ है कार्तिक शुक्ल पक्ष १४ को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

पाप मोचन ऋण मोचन से २० धनुष पर्यंत
पूर्ब दिशा प्रमाण ॥

ब्रह्महत्या आदि संपूर्ण पाप श्रधा संयुक्त स्नान करने से नष्ट होते हैं दान यथा सामर्थ्य देय वो जब श्रधापूर्व का स्नान करै पाप से निवृत्ति होय वो माघ कृष्ण पक्ष ? को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

सहस्र धारा सरयू में १०० धनुष प्रमाण है ॥

लछिमन जी के लेने को पाताल से सेसजी आये यह कारण से सहस्र छिद्र होगया तब से सहस्र धारा नाम पड़ा स्नान करके सेसरूपी बिष्णु की पूजाकरै बैसाख भर संपूर्ण तीर्थ सहस्र धारा मे बास करते हैं वो समग्र मास बैसाख स्नान वो स्वर्ण औ बस्त्र वो धेनु गाय दान करना चाहिये इस पुण्य की कदापि नास नहीं बैकुंठ का दाता है वो ब्राह्मण वो ब्राह्मणी को पूजा करना अवस्य मेव योग्य है श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

प्रथम प्रदक्षिणा अंतर्गृही की समाप्त हुई ॥

द्वितीया प्रदक्षिणा जो कार्तिक शुक्ल पक्ष ९ को सब लोग करते हैं लिखी जाती है ॥

बैतरणी विद्या कुण्ड के दक्षिण ॥

इस स्थान का स्नान करने वाला यम लोक की यात्रा से निवृत होता है भादों शुक्ल पूर्णिमा को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

घोखार्क कुण्ड प्रसिद्ध सूर्य कुंड बैतरणी के दक्षिण ॥

सूर्य का बर है कि जो प्राणी स्नान करै कुष्टादि संपूर्ण रोग वो दरिद्र आदि दुखों से निवृति होय अंत समै सूर्य लोक पावै वो इस स्तोत्र से अस्तुति करै ॥

अथ स्तोत्र ॥

भगवन्देवदेवशनमस्तुभ्यंचिदात्मने ॥
नमःसवित्रेसूर्यायजगदानंददायिने ॥ १ ॥
प्रभागेहायदेवायत्रयीमूर्तिमतेनमः ॥
विवस्वतेनमस्तुभ्यंयोगज्ञायसदात्मने ॥ २ ॥
परायपरलोकायत्रिलोकीतिमिरछिदे ॥
अचिंत्यायसदातुभ्यंनमोभास्वरतेजसे ॥ ३ ॥
योगप्रियाययोगाययोगज्ञायसादात्मने ॥
ओंकारायवषट्काररूपिणेब्रह्मरूपिणे ॥ ४ ॥
यज्ञाययजमानायहविषेऋत्विजेनमः ॥
रोगघ्नायसरूपायकमलानंददायिने ॥ ५ ॥
अतिसौम्यातितीक्ष्णायग्रहाणांपतयेनमः ॥

सचेसायनरुस्तुभ्यंभक्ताचायप्रियात्मने ॥ ६ ॥
प्रकासकायसततंलोकानांप्रियकारिणे ॥
प्रसीदप्रणतापाद्यमच्चंभक्तिकृतेस्वयं ॥ ७ ॥

भादों शुक्ल पक्ष ७ को वो रबिबार वो माघ शुक्ल पक्ष ७ वो पूस महीना के रबिबार को बिसेष यात्रा है ॥

रति कुण्ड सूर्य कुण्ड के पश्चिम ॥

स्नान से देह की दुर्गन्ध नष्ट होती है शुद्ध सरीर हो ता है माघ शुक्ल पक्ष ५ को यात्रा है ॥

कुस्माईयध कुण्ड रति कुंड के पश्चिम ॥

स्नान से काम के तद्वत सुन्दर्ता प्राप्त होती है ओ सब काम सिद्धि होता है रतिकुंड ओ इस कुंड में श्रद्धा पूर्बक स्नान से सुख प्राप्त होता है औ काम की चिकित्सा बिशेष होय माघ शुक्ल पक्ष ५ को यात्रा है ॥

मंत्रेस्वर कुंड से दक्षिण मंत्रेस्वर नाथ महादेव
कुसमाय कुंड के पूर्व ॥

कुंड बिषय स्नान दान करिके जो महादेवजी की बिधि वत पूजा करै उस को अच्छै स्वर्ग बास होता है राम-चन्द्रजी ने काल से इसी स्थान पर वार्ता किआ रहा यह महादेव श्री रामचन्द्रजी ने स्थापा है ।

स्लोक ॥

अक्षयंस्वर्गमाप्नोतिनात्रकार्यविचारणात्
मंत्रेश्वरस्यमहिमानहिकेनापिशक्यते १ ॥

सम्यग्वर्णयितुं देवियदुत्तमफलप्रदं ।
मंचेश्वरसमंलिंगंनभूतंनभविष्यति २ ॥
शितला देवी प्रसिद्ध देवकाली मंचेश्वर
कुण्ड के समीप ॥

दर्शन पूजा से बांछित फल प्राप्त होता है सर्वदापूजा उचित है विस्फोटक आदि में पूजा बिशेष है सोवारार को यात्रा है ॥

बन्दी देवी शीतला देवी से उत्तर ॥

देवी के स्मर्ण से बन्दी से छुटता है सर्व सिद्धि प्राप्त होती है पूजा औ ब्राह्मभोज उचित है मंगलबार को यात्रा है ॥

चुटकी देवी बन्दी देवी के उत्तर दिशा ॥

पूजा औ स्मर्ण से सब सिद्धि प्राप्त होती है दीपदान भी करना चाहिये देवीके समीप चुटकी बजावनेसे देवी प्रसन्न होती है सब मास के १४ को यात्रा है ॥

इन्द्र कुण्ड चुटकी देवी से पश्चिम ॥

स्नान दान से प्राणी स्वर्ग का भागी होता है कार्तिक कृष्ण पक्ष ३० को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

नीर्मली कुण्ड इन्द्र कुण्डके पश्चिम ॥

वृत्रासुर के बध करने से जो इन्द्र को ब्रह्म हत्या लगी सो इस कुंड के स्नान से छुट गई जो कोई स्नान करै उस की भी ब्रह्म हत्यादि पाप नष्ट होय सावन शुक्लि पक्ष १५ को यात्रा है ॥

गुप्त हरि स्थान निरमली कुण्ड के उत्तर ॥

संपूर्ण देवता को दैत्य ने संताया तब देवता शिव सहित नारायण की अस्तुति की इसी अस्थान पर आकाश बानी भई की तुम यहां प्रसिद्ध तप करौ हम गुप्त तप करते हैं तुम्हारी बिजै होगी पश्चात् देवता की बिजै भई बृहस्पति औ शिव समेत जब देवता ने स्तुति नारायण की किया नरायण प्रगट दर्शन दिया वो स्थानको बरदिआ जो कोई हमारा यहां दर्शन पूजा करैगा उस को अन्त में मुक्ति पद प्राप्त होगा बर्दैके नारायणगुप्त हो गये गुप्त तप करने वो गुप्त हो जाने से गुप्त हरिनाम पड़ा कार्तिक शुक्ल पक्ष १५ को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

गुप्तार तीर्थ गुप्त हरि के उत्तर दिशा ॥

यह सरिष्ट तीर्थ है यथा काशी बिषे मणिकरणिका औ उज्यैन में महाकाल नाथ औ नैमिषारण्य में चक्रि पाणि हैं वैसे अयोध्या में गुप्ता रहै यह तीर्थ के समान जगत में कोई तीर्थनहीं है पूर्व सैकड़ों जन्मपर्जंत अनेक तीर्थ औ धर्म करने के पश्चात गुप्तारका दर्शन प्राप्त होता है कार्तिक में संपूर्ण तीर्थ यहां रहते हैं कार्तिक बिषे अति बिशेष महात्म्य यहां का है जो प्राणी यहां कार्तिक में स्नान करिके ब्राह्मण की पूजा करै दान देय जप करै अन्न दान करै उसको सौत्रामणिआदि अनेक यज्ञ करने का फल होता है औ जो कार्तिक भर एकाहार करि के कल्प बास करै नारायण की पूजा करै औ विशेष गन्ध

धूप दीपदान घृत औ तिल के तेल का नारायण को करै उन को असंख्य फल होता है मुक्तिपदपावै कार्त्तिक शु० पक्ष १५ को सम्वत्सरी यात्रा है श्रीरामचन्द्रजीने इसी स्थान से स्वर्ग यात्रा करी है बार के १५ को भी यात्रा है॥

यम स्थान गुप्तार से पूर्व ॥

स्नान दान करने से जम को भै नहीं होती कार्त्तिक शु० पक्ष २ को सम्वत्सरी यात्रा है ॥

दुर्गा कुंड औ दुर्गा देवी अष्ट भुजी सूर्य कुण्ड के पश्चिम ॥

कुण्ड मेंस्नान करि के देवीकी पूजा जप होम ब्रह्मभोज करै सर्ब बांछित अर्थ सिद्धि होय अष्टमी तिथि औ मंगल बार को यात्रा है ॥

दूसरी परिक्रमा समाप्त भई कर्म से बैतर्णी को जाना चाहिये ॥

अब तृतीय परिक्रमा लिखी जाती है ॥

नरग्राम में नर कुण्ड औ नारायण कुण्ड दक्षिण दिशा है नरग्राम सूर्य कुंड केअग्नि कोण ॥

स्नान से पाप नष्ट होता है कार्त्तिक शु० पक्ष ११ को सम्वत्सरी यात्रा है ॥

त्रिपुरारि महादेव सूर्य कुण्ड के पूर्व ॥

सरयू विषे स्नान करिके संध्या जप करिके महादेव की पूजा करै सर्व सिद्धि प्राप्त होवै कार्त्तिक पूर्णिमा को यात्रा है ॥

बिल्वहरि त्रिपुरारि महादेव से पूर्व ॥

सरयू जी में स्नान करिके दर्शन पूजा करै जपकरै तौ मुक्ति पावै वैशाख कृष्ण पक्ष ३० को सम्बत्सरीयाचाहै ॥

बालमीक अस्थान बिल्वहरि के पूर्व ॥

जो प्राणी यहां स्नान दान ब्रत जप करै अंत में बिष्णु लोक गामी होय औयहां श्राद्ध तर्पन का गया के बराबर फल है कार्तिक पुर्णिमा को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

शृंगीऋषि का स्थान बालमीक के पूर्व ॥

सरयू में स्नान करिके ऋषि की पूजा करै तौ बिष्णु लोक गामी होय कार्तिक के पूर्णिमाको सम्बत्सरी यात्रा है औ रामनौमी को भी यात्रा होती है ॥

पुण्य ग्राम में पुण्य हरि औ पुण्य हरि कुण्ड है शृंगीऋषि से नैऋत्य कोण पर ॥

कुण्ड में स्नान औ पुण्य हरिके दर्शनसे सर्व सिद्धि प्राप्त होतीहै औ पिंड रोग नष्ट होता है रबिबार को यात्रा है ॥

भर्थ कुण्ड पुण्यहरि कुंड के पश्चिम ॥

कुण्ड में स्नान करिके भर्थजी औ भर्थ जी के रानी की पूजा करै सब पाप नष्ट हो जाय बस्त्रादिक अलंकार पूर्बक दंपति की पूजा चाहिये ॥

नंदी ग्राम भर्थ कुण्ड के उत्तर ॥

श्रीरघुनाथजी के बनबासकेसमै यहां भर्थजी ने तपकिया औ प्रजा की रक्षा किया है हजारोंसम्बत्सर जो काशी बास करने का फल है अथवा बाहर मकर प्रयाग के कल्प

बासका फल है वह नंदी ग्राम के दर्शन का फल है स्नान तर्पन श्राद्ध करने से पितृतृप्ति होते हैं विष्णु लोकप्राप्त होता है अन्न औ सुवर्ण दान करना चाहिये ॥

कालिका देवी नंदी ग्राम से पश्चिम ॥

पूजा मात्र से सब कामना सिद्धि होय चैत्र कृष्ण पक्ष १४ को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

जटा कुण्ड कालिका से पश्चिम ॥

रामचन्द्र भाइन सहित यहां जटानिर्वाये हैं इस करके जटा कुण्ड प्रसिद्ध भया कुण्डमें स्नान करिके सीतारामजी को लछिमन सहित पूजा करै सब अघ से निवृत्ति होय चैत्र कृष्ण पक्ष १४ को सम्बतसरी यात्रा है॥

अजित स्थान औ कुण्ड जटा कुण्ड के पश्चिम ॥

स्नान करिके ब्रत रखकै वा दुग्धपान करि के अजितकी पूजा करै सब कामना सिद्धि होय ॥

शत्रुघ्न कुण्ड अजित्के स्थान से पूर्व ॥

कुण्ड में स्नान करै दान करै सब सिद्धि प्राप्त होय चैत्र कृष्ण पक्ष ११ को सम्बतसरी यात्रा है ॥

गया कूप शत्रुघ्न कुण्ड के उत्तर औ भर्थ कुण्ड के दक्षिण दिशा ॥

गया कूप के जल से जो प्राणी स्नान करि के श्राद्ध करते हैं उन के जितने पित्र नरक में होते हैं सब स्वर्ग जाते हैं औ जो प्राणी श्राद्ध करते हैं वे पित्र ऋण से निवृति होते हैं औ पित्र के प्रसाद से पुत्र औ धन होता है औ पिण्डा

सक्तू का अथवा खीरका वा गोदी का देना चाहिये सोम्वारी अमावास्या को याचा है ॥

पिसाच मोचन तीर्थ गया कूप के पूर्व दिशा ॥

स्नान दान करने वाला मनुष्य पिशाच योनि न पावेगा श्राद्ध करना यहां विशेष माहात्म्य है पित्र पिसाच योनि से निवृति हो जाते हैं अगहन शुक्ल पक्ष १४ को सम्वत्सरी याचा है ॥

मानसर पिसाच मोचन के पूर्व ॥

यह पुण्य तीर्थ है इस विषे स्नान दान करने से मन वच कर्म जितने पाप हैं जो मेरु तुल्य पाप होय तो नष्ट हो जाय अमावस्या को पूर्णिमा को याचा है ॥

तमसा नदी पिसाचमोन के दक्षिण ॥

यह नदी बड़ी मनोहर है इसके किनारे पर मुनि लोग के स्थान हैं इस के स्नान दर्शन से संपूर्ण पाप नष्ट होता है श्राद्ध भी करना चाहिये ॥

मान्डव्य मुनि का स्थान तमसा के किनारे स्थानके दर्शन से पाप नष्ट होते हैं ॥

॥ प्रमोदक बन मान्डव्यस्थान के पास ॥

यह बन बड़ा सोभाय मान अनेक तरह के वृक्षलता से परिपूरित है मान्डव्य का तप स्थान है दर्शन से पाप नष्ट होता है ॥

॥ गौतमी रिषि प्रमोदक बन के पूरब ॥

स्नान के दर्शन से पाप नष्ट होजाता है प्राणी जो स्नान

दर्शन करैं वो श्राद्ध करैं पित्र तृप्ति होंय वो सब मनोरथ कर्ता के परिपूर्ण होय अगहन शुक्ल पक्ष १५ को यात्रा है

च्यवन ऋषि का स्थान गौतम स्थान के पूरब ॥

यथा गौतम ऋषि का माहात्म्यफल यात्रा है ॥

सीता कुण्ड तमसा के दक्षिण भाग ॥

कुण्ड के स्नान से सब तीर्थ के स्नान वो सर्ब दान का फल होता है अंत को इस महात्म्य का बक्ता स्रोता बैकुंठ को जाते हैं जो इस तीर्थ को करते हैं वे बड़े सुख को पाय के बैकुंठ जाते हैं भादों शुक्ल पक्ष १४ को सम्वत्सरी यात्रा है ॥

दुग्धेश्वर महा देव सीता कुण्ड के समीप ॥

दर्शन से पूजा से सब सिद्धि होय जेठ शु० पक्ष १४ को सम्वत्सरी यात्रा है ॥

राम कुण्ड सीता कुण्ड के समीप ॥

सीता कुण्ड वो राम कुण्ड दूनो मे स्नान करना चाहिये फल वो यात्रा यथा सीता कुंड ॥

भैरो स्थान राम कुण्ड के दक्षिण ॥

जो विधि पूर्बक पुजा करै उसकी सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धि होय वो जो निर्बिघ्न अजोध्या वास करना चाहै उसको अवस्य भैरों जीकी पुजा उचित है अगहन शु० पक्ष ८ को यात्रा है ॥

दुग्ध कुण्ड दुग्धेस्वर नाथ के निकट ॥

बन से राम चन्द्र जी के आगमन के समै सब देवता के साथ कामधेनु भी दर्शन को आई वो दुग्ध उसका चुआ

इससे दुग्ध कुण्डनाम पड़ा कुण्ड मे स्नान करिके महादेव की पूजा करै सब पाप से निवृति होय जेठ शु० पक्ष १४ को याचा है ॥

सुग्रीव कुण्ड दुग्धेश्वर कुण्ड के पुरब ॥

कुण्ड के स्नान वो राम जी के पूजा से सब मनोरथ सिद्धि होती है ॥

हनुमत कुण्ड सुग्रीव कुण्ड के पूरब ॥

यथा सुग्रीव कुण्ड की याचा फल ॥

बिभीषण कुण्ड हनुमान कुण्ड के पूरब।

यथा सुग्रीव कुण्ड की याचा फल ॥

आस्तीक स्थान बिभीषण कुण्ड के पश्चिम ॥

स्थान के दर्शन से सर्प की भय न होय ॥

रमणक स्थान अस्तीक स्थान के समीप ॥

स्थान के दरशन से पाप नष्ट होता है ॥

घृताची कुण्ड रमणक स्थान के पश्चिम ॥

कुण्ड में स्नान करिके बिश्नु की पूजा करै सब मनोरथ सिद्धि होय औ देह की दुर्गन्ध न रहै पूस शु० पक्ष १४ को सम्बत्सरी याचा है ॥

सरयू औ घाघरा का संगम घताची कुंड के पश्चिम २ जो जन पर ॥

जो प्राणी अमावस्या वा पुर्णिमा व द्वादशी वा ब्यती पात योग वा ग्रहन मे संगम बिखे स्नान करते हैं उनको हजार अस्व मेध यग्य वो सौ बाजपेय यज्ञ औ हजार राज

सूययज्ञ औ कुरुक्षेत्र मे ग्रहन स्नान का फल होता है अन्त में वैकुंठ प्राप्त होता है हजार युग पर्यंत खड़ा रहै वो दस हजार युग नीचे सिर करिके झूलै तौ इस तप का फल औ पूस शु० पूर्णिमा को संगम स्नान का फल बरा बर पूस शु० के पूर्णिको दश १००० हजार करोड़ औ दस सौ करोड़ तीरथ संगम में वास करते हैं जो स्नान करिके गोदान करै उसको सब तीरथ के स्नान का फल होता है सङ्गम पर पूस मे दीप दान करने से राजा होता है बाराह जी ने हिरण्याक्ष को बध करके संगम परश्रम निबार्ण किआ है इसके स्नान से सत्रु को भय नहीं होती वो न इष्ट का बिछोह होता बाराह जी का बर है पूस शुक्ल पक्ष १५ को सम्बत्सरी यात्रा है॥

जम्बू तीर्थ संगम से पश्चिम॥

स्नान से ब्रह्महत्यादि पाप नष्ट होते हैं॥

तुंदिल स्थान सरयू के तट॥

सर्यू जी मे स्नान करके स्थान के दरशन करने से आवा गमन से निवृत्ति होता है॥

अगस्त सरतुंदिल स्थान से दक्षिण॥

जो इस सर पर तीन दिन निर्जल ब्रत करै उस प्राणी को अग्निष्टोम जज्ञ का फल होता है॥

पारासरमुनि का स्थान सर्यू के उत्तर भाग॥

सर्यू मे स्नान करिके मुनि की पूजा करै तौ सब मनोरथ सिद्धि होय॥

श्रीः कुण्ड औ कुण्ड के समीप महालक्ष्मी का स्थान
गोकुल ग्राम मे सर्यू के उत्तर भाग ॥

जो प्राणी कुण्ड मे स्नान करिके महालक्ष्मी जी की पूजा औ दान करै उसका सब अलक्ष नष्ट होय महालक्ष्मी के स्थान के समान दुसरा लक्ष्मी का दाता स्थान नहीं है क्वार शुक्ल पक्ष ८ को यात्रा है यात्रा के दिन जो कुण्ड में स्नान करिके महालक्ष्मी की पूजा करै उसके गृह में सर्वदा लक्ष्मी बास करैं ॥

स्वप्नेश्वरी देवी स्थान महालक्ष्मी के पास दर्शन से स्वप्न का हाल प्राणी का प्रगट होता है अष्टमी चतुर्दसी को यात्रा है बर्शाच नदी औ टेढ़ीका संगम स्वप्नेश्वरी के पूर्व ॥

स्नान दान से निहपाप हो जाता है कार्त्तिक शुक्ल पक्ष १५ को सम्बत्सरी यात्रा है ॥

कुटिला वर्शाच के आगे

स्नान का बिशेष फल है रोग आदि नष्ट होते हैं कार्त्तिक शु० पक्ष १५ को यात्रा है ॥

कुबिजा वो-सरयू का संगम ॥

स्नान दान से सम्पूर्ण पाप नष्ट होता है रामनौमी को यात्रा है ॥

मख स्थान प्रसिद्धि मखोड़ा कुटीला
सरयू संगम से ईशान ॥

यहां मनोरामा अति पबित्र नदी है राजा दसरथ ने इस जगह अश्वमेध यज्ञ किया है जो प्राणी यहां

स्नान करिकै तर्पण करतेहैं उनका समग्र पापनष्ट होताहै वो पितृ उनके त्रिपित होतेहैं चैत्रशु० पक्ष १५ कोयात्रा है॥

रामरेखा नदी मखौड़ा से अग्निकोण पर ॥

रामचन्द्रजीने धनुषसे रेखा करदिया उससे रामरेखानदी उत्पन्न भई गौके जलपान करने केहेतु रामरेखा के दर्शन से यमलोक का दर्शन नहीं होता स्नान कर्तमात्र पाप नष्ठ हो जाता है ब्राह्मण स्नान करै तो पण्डित क्षत्री स्नान करै तौ बिजय होय वैस्य स्नान करैतो धन मान सुन्दर्ता नकरै तौ सुखी होय चैत्र शु० पक्ष १३ को सम्बत्सरी यात्रा है॥

॥ राम तीर्थ प्रसिद्ध राम् घाट सर्यू मे जानकी घाट से पूरब ॥

राम नौमी को स्नान करिके जन्म भूमि का दर्शन औ राम जी की सुद्ध चितसे पूजा करै इह लोक मे बांछित सुख करिकें अन्त में पर्मपद पावै जो गृह से इस तीर्थ का स्मरण कर्ते हैं उनका पाप नष्ट होजाता है यह तीर्थों का सिरोमणि है रामनौमी को यात्रा है॥

॥ इसके आगे नन्दग्राम औ बैतर्णी से पूरब देव तीर्थ कर्म से जाय संत महात्मा की रीति है की जहां से परि क्रमा का प्रारम्भ करते हैं उहां समाप्त करते हैं ॥

चतुर्थ परि क्रमा लिखी जाती है।

प्रातःकाल स्वर्ग द्वार स्नान करिके धर्म हरि का दर्शन करै पश्चात जन्म स्थान जाय तब चक्र तीर्थ जाय तब ब्रह्म

कुण्ड तब ऋण मोचन तब सहस्र धारा स्नान करै तौ सब पाप से निवृत्ति होय मुक्ति पद पावै हरि बासर को परिक्रमा करना चाहिये औ बिसेष भादों शु० पक्ष ११ को परिक्रमा कर्ना चाहिये ॥

पंचम परिक्रमा पद्म पुराण औ बाल्मीकी
रामायण औ महा भार्थादि के स्नान
मत्से लिखी जाती है ॥

कर्त्ता इस परिक्रमा को संपूर्ण पृथ्वी के परिक्रमा का फल प्राप्त होता है संसार बिषे पुत्रपौत्र संप्रदादि अनेक प्रकार का सुख करिके अन्त काल मे बिष्णु लोक जाता है इस परिक्रमा को बशिष्ट औ याज्ञ बलिक उद्दालक भार्गव गौतमशांडिल्य आदि ब्रह्मर्षि औ राजर्षि ने किआ है ब्रह्म हत्या गोहत्यादि सब पाप नष्ट होते हैं बशिष्ट संगिता में बड़े बिधि से लेष है प्रथम राम तीर्थ स्नान करि के परिक्रमा प्रारम्भ करै राम तीर्थ से अग्नि कोण पर बिल्व हरि उससे दक्षिण पुण्य हरि उसके नैरित्य कोण पर राम कुण्ड उसके समीप सीता कुण्ड उसके समीप दुग्धेश्वर नाथ उसके समीप दुग्ध कुण्ड औ आसतीक मुनि का स्थान दुग्ध कुण्ड के पश्चिम उसके बायब्य कोण पर तमसा औ तमसा के पश्चिम किनारे पर च्यवन ऋषि का स्थान उनके पश्चिम गौतम ऋषि उनके पश्चिम मान्डब्य मुनि औ प्रमादक बन उसके उत्तर दिर्ग सर उसके उत्तर घर्घरा प्रभूरित पानाम शिव उनके ईशान कोण पर सर्यू के

दक्षिण दिशा जम्बू तीर्थ उसके अग्नि कोण पर खप्नेखरी देवी इन के पूरब बसौंन नदी है उसके पूरब गोकुला ग्राम बिषे श्री कुण्ड श्री कुण्ड केसमीप महालक्ष्मी उसके आगे कुबिजाश्र संगम उसके ईशान परमख स्थान मनोरामा नदी है उसके अग्नि कोण पर राम रेषा नदी है उसके अग्नि कोण पर शृंगी ऋषि उसके पश्चिम बाल्मीक स्थान उहांसे क्रम से बिल्व हरि आवना चाहिये यह परिक्रमा पंचम समाप्त भई ॥

॥ अथ पंच तीर्थ पद्म पुराणोक्त जिसके कर्ता को संपूर्ण अवधके तीर्थ कर्नेका फल होता है वांछितार्थ सिद्धि होती है अन्त काल में बिस्नु लोक प्राप्त होता है प्रातःकाल स्वर्ग द्वार स्नान करिके राम तीर्थ स्नान करै तब चक्र तीर्थ स्नान करै तब पाप मोचन स्नान करै तब सहस्रधारा स्नान करिकेनागेस्वर नाथ की पूजा करै पंच तीर्थ समाप्त हुई ॥

उन तीर्थों के नाम जो रुद्रया मल से पद्म पुराण के अयोध्या माहात्म्य में बिशेष हैं अथ नाम तीर्थ प्रारम्भ ॥

मत गजेन्द्र कुण्ड मत गजेन्द्र के समीप ॥

चैत मास के प्रथम मंगल बार को यात्रा है ॥

१—सप्तसागर मत गजेन्द्र कुण्ड के समीप कार शुक्ल पूर्णिमा को यात्रा है ॥

२—चन्द्र कुण्ड सुग्रीव कुण्ड के दक्षिण सावन शु० पक्ष ५ को यात्रा है ॥

३—मंगल कुण्ड चन्द्र कुण्ड के समीप ॥

४—वो बुद्ध कुण्ड मंगल कुण्ड के समीप ॥

५—सुक्र कुण्ड बुद्ध कुण्ड के समीप ॥

६—शनि कुण्ड वृहस्पति कुण्ड के समीप ॥

७—इन चारों कुण्डों की यात्रा अपने २ बार को होती है महालक्ष्मी कुण्ड चक्र तीर्थ के समीप कार्तिक शु० पक्ष ६ को यात्रा है ॥

८—सरस्वती कुण्ड महालक्ष्मी कुण्ड के निकट कार्तिक शु० पक्ष ३ को यात्रा है ॥

९—नारद कुण्ड सरस्वती कुण्ड के उत्तर कार्तिक शु० पक्ष ७ को यात्रा है ॥

१०—दत्तात्रेय कुण्ड बाम देव कुण्ड के उत्तर कार्तिक शु० पक्ष ९ को यात्रा है ॥

११—प्रहलाद कुण्ड दत्तात्रेय कुण्ड के समीप कार्तिक शु० पक्ष १० को यात्रा है ॥

१२—बावन कुण्ड ब्रह्म कुण्ड के समीप कार्तिक शु० पक्ष ११ को यात्रा है ॥

१३—गयान कुण्ड ब्रह्म कुण्ड के उत्तर दिशा कार्तिक शु० पक्ष १२ को यात्रा है ॥

१४—गज कुण्ड पाप मोचन के उत्तर माघ कृष्ण पक्ष ३० को यात्रा है ॥

१५—सागर कुण्ड गज कुण्ड के उत्तर माघ के ३० को यात्रा है ॥

१६—मुचकुंद कुण्ड के सागर कुण्डके आगे औ सहस्त्र धारा के समीप माघ शु० पक्ष ८ को यात्रा है ॥

१७—मरु कुण्डराम तीर्थके पूर्व समीप चैत्र शु० पक्ष को यात्रा है ॥

१८—इक्ष्वाकु कुण्ड मरु कुण्डके पूर्व चैत्र शु० पक्ष ६ को यात्रा है ॥

१९—हरिश्चन्द्र कुण्ड इक्ष्वाकु कुण्डके पूर्व चैत्रशु० पक्ष ४ को यात्रा है॥

२०—विघ्नेश्वर कुण्डहरिश्चन्द्र कुंड के समीप चैत्र शु० पक्ष ५ को यात्रा है ॥

२१—कंवल कुंड विघ्नेश्वर कुण्डके समीप चैत्र शु०पक्ष७ को यात्रा है ॥

२२—इन्द्रदमन कुण्ड कंमल कुण्डके समीप चैत्र शु० पक्ष को यात्रा है ॥

२३—विष्णुपादोदक कुण्ड विल्व हरि के दक्षिण भादों शु० में यात्रा है ॥

२४—गरुतुम कुण्ड सूर्य कुण्ड के पूर्वभाद्र शु० मेंयात्रा॥

२५—गदा कुण्ड गरतुम कुण्ड के पश्चिम भाद्र शु० में यात्रा ॥

२६—शुक्र कुण्डगदा कुण्ड के आगे भाद्र शु० में यात्रा ।

२७—अशोक कुण्ड सूर्य्य कुण्डके पूर्व भाद्र शु० मेंयात्रा

२८—नसिंह कुण्ड सूर्यकुंड के पूर्वभाद्र शु० मेंयात्रा है॥

२९—बिमल कुण्ड सूर्य कुण्डके पूर्व भाद्र शु० में यात्रा

३०—प्रणै कुण्ड सूर्य कुंड के समीप आषाढ़ शु० मेंयात्रा

३१—भैरोकुंड रामकुंडके दक्षिण आषाढ़ शु०में यात्रा॥

३२—गर्ग मुनि का स्थान भैरो कुण्डके समीप आषाढ शु० में यात्रा॥

३३—कालिका कुंड गर्ग मुनि के समीप आषाढ शु० में यात्रा है॥

३४—त्रिपुरारि कुण्ड कालिका कुण्ड के समीप आषाढ़ शु० में यात्रा॥

३५—नरनारायणकुंड त्रिपुरारि कुंड के समीप आषाढ शु० मे यात्रा॥

३६—सनतकुमार कुंड नरनारायण कुंड के समीप आषाढ शु० पक्ष ३ को यात्रा॥

३७—मरु कुंड मार्कंडेय जी का स्थान चुटकी देवी के निकट॥

३८—हिरण्य गर्भ तीर्थ गोप्तारेश्वर के समीप श्रावण शु० पक्ष में यात्रा॥

३९—महिखासुर कुंड हिरण्य गर्भ के समीप श्रावण शु० पक्ष में यात्रा॥

४०—उद्दालक कुंड महिषासुर कुंड के समीप श्रावण शु० पक्ष में यात्रा॥

४१—नीलग्रीव कुंड उद्दालक के पास श्रावणशु०मे यात्रा

४२—अति मंगल कुंड नीलग्रीव कुंडके पास श्रावण शु० पक्ष में यात्रा है॥

४३—बरुणा कुण्डयमस्थल के पास जेठ शु० पक्ष में यात्रा ॥

४४—कुबेर कुण्ड बरुणा कुण्ड के समीप जेठ शु० पक्ष में यात्रा है ॥

४५—पिसंगला कुण्ड कुबेर कुण्ड के समीप जेठ शु० पक्ष में यात्रा ॥

४६—ललिता कुण्ड पिसंगला कुण्ड के समीप जेठ शु० पक्ष में यात्रा है ॥

४७—प्रभास तीर्थ ललिता तीर्थ के पास जेठ शु० पक्ष में यात्रा है ॥

४८—अगस्तसर प्रभास तीर्थ के दक्षिण जेठ के ३० को यात्रा है ॥

४९—काल गंगा अगस्तसर के आगे सरयू में ॥

५० नाम तीर्थों के समाप्त भए ॥

श्लोक

मतिविपुलबिधोनैर्बर्णितंधर्मसाधं ।
कलपतिपरभक्त्याचैत्रमाहात्म्यमेतत् ॥
येइहनरउदारःश्रीशनाथः ससम्यग् ।
ब्रजतिहरिनिबासंसर्बभोगांश्चभुक्त्वा १ ॥

प्रगट रहे की इसपुस्तक अवध यात्रा को श्री बेदपारग त्रिपाठी उमादत्त महाराज पण्डित सर्ब शास्त्रके ग्याता ने

संपूर्ण बिचार के शुद्धता के प्रमाण हेतु एक श्लोक अपना अन्त में लिख के दसखत अपना लिखा है ॥

श्लोक

प्रमाणप्रमितोलेखउपाकारविशेषभृत् ।
श्रीगुरुशरणस्यायमुपादेयोमनीषिभीः ॥
दसखत त्रिपाठी उमादत्त पण्डित

इति अवध यात्रा समाप्तः

संपूर्ण बिचार के शुद्धता के प्रमाण हेतु एक स्लोक अपना अन्त में लिख के दसखत अपना लिखा है ॥

स्लोक

प्रमाणप्रमितोलेखउघाकारबिशेषभृत् ।
श्रीगुरुशरणस्यायमुपादेयोमनीषिभि: ॥

दस्तखत त्रिपाठी उमादत्त पण्डित

इति अवध यात्रा समाप्त:

I